प्र मा ण - प त्र

श्रीमती वंदना सोपानराव मोहिते ने मेरे निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम॰ फिल॰ (हिंदी) उपाधि के लिए " फणीश्वरनाथ रेणु के आँचलिक उपन्यास मैला आँचल " में चित्रित - समाज " शीर्षक यह लघु - शोध - प्रबंध तैयार किया है। इसमें प्रस्तुत विचार एवं विवेचन मेरी जानकारी में मौलिक है।

(डा॰ मो॰ रा कुलकर्णी)

शोध - निर्देशक

प्राक्कथन

रेणु का उपन्यास साहित्य हिंदी में अपना विशेष महत्त्व रखता है। रेणु ने " मैला आँचल " उपन्यास के माध्यम से आंचलिक उपन्यास का सूत्रपात किया। आंचलिक उपन्यास हिंदी उपन्यास क्षेत्र में एक नयी धारा बनकर उभरा। " मैला आँचल " रेणु का प्रथम श्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जा सकता है। रेणु गाँव के जीवन में इतने रम गये है कि अंचल का यथार्थ वर्णन उससे छिपा नहीं रहा। और यहीं उनके उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण पहलू है कि जो लिखा है वह स्वयं देखे भोगे अनुभव पर ही लिखा है। इस उपन्यास में एक व्यक्ति के नायकत्व की परिकल्पना को छोडकर एक अंचल को ही नायक बना दिया है। " मैला आँचल " में एक अंचल को केंद्र बनाकर उस अंचल के समग्र और संश्लिष्ट जीवन का सशक्त चित्रण करते हुये उसके माध्यमसे समग्र ग्राम जीवन की समस्याओं को ध्वनित किया है। इस उपन्यास में लोक भाषा, लोक - कथा, लोक - गीत, लोक - नृत्य ने परिवेश का रचनात्मक और नवीन रूप प्रस्तुत किया हैं। रेणुजी का यह उपन्यास हिंदी साहित्य को एक नया मोड देता हैं। " मैला आँचल " की परंपरा में आनेवाले उनके परवर्ती उपन्यास " परती परिकथा," " जुलूस ", " दीर्घतपा", " कितने चौराहे ", और

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

"पल्टूबाबू रोड ", " मैला आँचल " के उपलब्ध शिखर को भले ही प्राप्त न कर सके किंतु उनमें निश्चित ही रचना वैशिष्ट्य है। इन उपन्यासों में अपने गाँव की स्थिति, बनते - बिगड़ते गाँव और टूटते हुये परिवारों को तथा परिवर्तन की लहर को सशक्तता के साथ शब्दा-चित्रों के रूप में संकलित किया है, जो अंचल के समग्र जीवन को अभिव्यक्त करने में सफल बन गया है।

प्रस्तुत प्रबंध के प्रथम अध्याय में फणीश्वरनाथ रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। उनका जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, प्रेम, विवाह पारिवारिक जीवन आदि विषयों को सूक्ष्मता से रेखांकित किया है। उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि, उनके क्रान्तिकारी जीवन आदि बातों को देखने के बाद यह सिध्द होता है कि उन्होंने जीवन को स्वयं भोगा और बाद में उसका जीता जागता चित्रण साहित्य द्वारा प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य जीवन से जुड़ा हुआ साहित्य है। इस अध्याय में रेणुजी के साहित्य सेवा और साहित्य साधना का उल्लेख करके उनकी विविधयामी साहित्यिक रचना पर प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय में अंचल शब्द के विभिन्न अर्थों को स्पष्ट किया है। आंचलिकता के बारे में भी विभिन्न विद्वानों के

अलग - अलग मतों का स्पष्टीकरण यहाँ किया है। इसी अध्याय में आंचलिक उपन्यासों का संक्षेप में विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय में श्री फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास " मैला आँचल " में समाज जीवन का चित्रण किया है। इसके अंतर्गत समाज को तीन विभागों में विभाजित करके (१) उच्चवर्गीय समाज (२) मध्यमवर्गीय समाज (३) निम्नवर्गीय समाज उनका अलग - अलग रूप से विवेचन किया है। उच्च वर्ग के जमींदार तहसीलदार लोग किस प्रकार कायस्थों और किसानों का शोषण करते हैं, और परिस्थिति के अनुसार उच्चवर्ग और मध्यवर्ग के लोग शोषितों के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। इसको स्पष्ट किया गया है। अंत में निम्नवर्गीय लोगों को जागृत करने का कार्य प्रारंभ हो जाता है तब ये निम्नवर्गीय लोगों में उच्च - वर्गियों के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा निर्माण होती है। निम्नवर्गीय लोग अंधश्रद्धा में किस प्रकार डूबे हुये है या धर्म के नामपर मठों में क्या - क्या चल रहा है इसका चित्रण भी इस अध्याय के अंतर्गत किया गया है। निम्नवर्गीयों के आर्थिक सांस्कृतिक, सामाजिक, परिस्थितियों को भी रेखांकित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में मैला आँचल में जो सामाजिक

संघर्ष है इसे दो विभागों में बाँटकर (१) राजनीतिक संघर्ष (२) सामाजिक संघर्ष उनका सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन किया है। राजनीतिक संघर्ष के अंतर्गत प्रमुख स्थान जातिवाद को दिया गया है। राजनीतिक संघर्ष ही जातिवाद का अखाडा बन गया है। सामाजिक संघर्ष अलग - अलग प्रकार के हैं। सामाजिक संघर्ष में जमींदार और किसानों का संघर्ष है, जमींदार और कायस्थों का संघर्ष है। प्रारंभिक रूप में मेरिगंज में नीलहे साहब और कायस्थों का भी संघर्ष था। मठ की अधिकार प्राप्ति के लिए भी संघर्ष है। जोतिषी जी का आधुनिकता के प्रति संघर्ष है। इसके कारण वे विदेशी दवा - दारू का विरोध करते है। क्योंकि पुरानी रूढी परंपरा नवीनता का विरोध करती है। पति - पत्नी के बीच संघर्ष, स्त्रियों के बीच होनेवाले संघर्ष, युवाक्रान्तिकारियों के संघर्ष, आर्थिक संघर्ष आदि संघर्षों का विस्तृत विवेचन इस अध्याय के अंतर्गत आता है।

पंचम और अंतिम अध्याय उपसंहार का है। अनुशीलन करने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनको इस पंचम अध्याय में सार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस सफल आंचलिक उपन्यासकार के रूप में रेणु की जो विशेषताएँ हैं उनका उल्लेख भी इस अध्याय में किया है। अंत में आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ की सूची दी है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

प्रस्तुत शोध - प्रबंध को संपन्न बनाने में

निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है।

१) ग्रंथालय - शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

२) ग्रंथालय - महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर

३) ग्रंथालय - छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा

४) ग्रंथालय - कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, इस्लामपूर

इन सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों के प्रति मैं सहृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

मेरा परमसौभाग्य यह मानती हूँ कि मुझे श्रद्धेय गुरुवर डॉ॰ गोरख रा॰ कुलकर्णी जैसे प्रतिभासंपन्न मार्गदर्शक मिले। मेरा यह प्रयास उन्हीं के सहयोग से सफल बन गया है। आपने अपना गुरुत्व मुझपर उतना हावी कभी नहीं होने दिया जिससे कि मेरा वैचारिक अस्तित्व दब जाय। इन ऋणों के प्रतिपादन में आभार या धन्यवाद शब्दों से ऋणमुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। गुरुवर के पुनीत चरणों में नतमस्तक होने के अलावा मैं और क्या कर सकती हूँ ?

गुरुवर्य डॉ॰ कुलकर्णीजी की धर्मपत्नी डॉ॰ अवंतिका कुलकर्णीजी ने भी

मुझे इस कार्य के लिए प्रसन्नता के साथ प्रोत्साहित किया। उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज (इस्लामपूर) के प्रा॰ डॉ॰ अर्जुन चव्हाण जी ने मुझे अपनी बहन मानकर एक बड़ी प्रेरणा दी कि जिसके सहारे मैंने एम॰ ए॰ में प्रथम श्रेणी पायी और एम फिल का अध्ययन भी पूरा कर सकी। मेरी भाभीजी सौ॰ अनिता चव्हाण जी ने भी मुझे इस कार्य के लिए उत्तेजना दी है।

जिस कॉलेज में सेवारत हूँ उस कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, (पांचवड) के प्राचार्य श्री॰ एस॰ पी॰ दाते और मेरे सहयोगी प्राध्यापक एवं कर्मचारियों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग से यह कार्य संपन्न हो पाया। अत: इन सब के प्रति आभार प्रकट करती हूँ। मेरी माताजी अनपढ होते हुये भी उनकी मुझे पढाने की जिद और पिताजी के आशीर्वाद से ही मेरा शोधकार्य सफल बन सका। इनके चरणों में नतमस्तक होती हूँ।

मेरी बहन सौ॰ लता और श्री॰ पवार, सौ॰ नंदा और श्री॰ खासकर इनकी आर्थिक सहायता और प्रोत्साहन से मैं मेरा कार्य सफल बना सकी। बहन सौ॰ पुष्पा और श्री॰ पवार, सौ॰ सुनंदा और श्री॰ माने, भैया - भाभी इनके आशीर्वाद से मेरा यह कार्य

सफल बन सका। अंत में इस कार्य को सफल बनाने में जिनका सहयोग मिला उन सबका आभार प्रकट करती हूँ और यह लघु शोध-प्रबंध विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

वन्दना सोपानराव मोहिते.